युवाओं में बढ़ता कोरेक्स का नशा

डॉ. अकबर खान
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
नरसिंहगढ़,राजगढ़ (म.प्र.)

सारांश

नशे के यूं तो विविध प्रकार होते हैं, किन्तु कोरेक्स का नशा आजकल युवाओं में बहुत प्रचलित है। दवा को नशे के रूप में प्रयोग करने वाले कोरेक्स सेवियों से प्राप्त जानकारी पर यह शोध पत्र केन्द्रित है। अध्ययन क्षेत्र के रूप में रीवा नगर के 100 युवाओं को विचारपूर्वक निदर्शन के माध्यम से चयनित कर साक्षात्कार अनुसूची और अवलोकन के द्वारा तथ्य एकत्र किये गये है। तथ्य वर्गीकरण व विश्लेषण के पश्चात् निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि कोरेक्स सस्ता, सुलभ व कम, दुर्गंध वाला नशा होने के कारण युवाओं में प्रिय हैं।

इसका सेवन वे महफिल जमाने, संगी-साथी व मौज मस्ती के लिये करते हैं।

मुख्य शब्द - *कोरेक्स, एंटीहिस्टामाइन, टोरेक्स, कोसोमी, फैन्सीडील रिस्रा-डी।*

समाज वैज्ञानिकी अक्टूबर-मार्च 2020-21
अंक-33-34, ISSN 0973-4201
भारतीय समाज विज्ञान परिषद्

युवा समाज की रीढ़ होते हैं। देश की शक्ति होते है। देश के विकास और कल्याण में युवाओं की अहम् भूमिका है।[1] देश की 55 प्रतिशत आबादी युवाओं की है। समाज के आधार की सबसे सशक्त कड़ी युवा होता है, परन्तु आज का युवा घुटन, संत्रास, निराशा, असफलता और पागलपन के कारण नशे में डूबता जा रहा है। वह दिग्भ्रमित हो रहा है। जिन हाथों में व्यक्तित्व निर्माण की पोथी और राष्ट्र निर्माण के गीत लिखने वाली कलम होनी चाहिए, उन हाथों में आज जाम, सिगरेट या नशे का कोई भी रूप नजर आता है।[2]

युवा राष्ट्र का भविष्य होता है। उसके कंधों पर राष्ट्र का उत्तरदायित्व अवलंबित रहता है तथा राष्ट्र की शक्ति उन्हीं के हाथों में निहित होती है। परन्तु आज का युवा पथ भ्रष्ट होकर नशे की गिरफ्त में छटपटा रहा हैं। युवाओं में नशे की समस्या ने एक विकराल रूप ले लिया है।[3]

एक अनुमान के अनुसार भारत में ड्रग्स के आदी युवाओं की संख्या कम से कम 7.5 करोड़ होगी।[4] संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में हर पाँच में एक व्यक्ति नशाखोरी से ग्रसित है और उसे इससे मुक्त कराने की आवश्यकता है।[5]

नशा और नशीले पदार्थ-

मानसिक स्थिति केा बदल देने वाले पदार्थ या रसायन जो किसी को नींद या नशे की हालत में लायें, उन्हें नशीले पदार्थ, नारकोटिक्स या ड्रग्स कहा जाता है। मादक द्रव्य या नशा व पदार्थ है जो मन और शरीर की भौतिक एवं रासायनिक क्रियाओं पर किसी न किसी रूप में अपना प्रभाव डालता है।

नशीले पदार्थों का सेवन बढ़ते-बढ़ते जब छटपटाहट का अनुभव करने लगता है, मन उसके बिना बेचैनी की अनुभूति करता है तथा समय के अंतराल में मादक पदार्थों की खुराक लगातार बढ़ने लगती है, तो इस विशेष स्थिति को नशाखोरी कहते हैं।[6]

नशीले पदार्थों में भाँग, हेरोइन, गाँजा, अफीम, स्मैक, कोकीन, संखिया और विभिन्न बीमारियों में प्रयुक्त होने वाली दवाईयाँ आजकल नशे के रूप में प्रयोग की जा रही हैं। नशीले इंजेक्शन और गोलियों का भी उपयेाग किया जा रहा है।

कोरेक्स और युवा-

कोरेक्स पीने वाले युवाओं की अपनी एक अलग दुनिया है। ये दवाओं के रूप में उपयोग किये जाने वाले कफ सिरफ जैसे-कौरेक्स, रेसकफ, फैन्सीडील आदि का उपयोग नशे के लिये करते हैं।

शासन द्वारा बिना चिकित्सकीय प्रिस्क्रेप्शन **कोरेक्स एवं फैन्सीडिल सिरप** नहीं दिये जाने की रोक लगाये जाने के बाद अब यह कम्पनी **रेसकफ** नामक सिरप का उपयोग ज्यादा कर रही है।

इतना ही नहीं रेसकफ के अलावा **कोरेक्स से मिलता-जुलता टोरेक्स, कोसोमी, कफड्राई, रिस्प्रा-डी** आदि अन्य कफ सिरप का उपयोग भी नशे के लिये किया जा रहा है।[7]

कोरेक्स सिरप एक एंटीहिस्टामाइन है। इसके प्रभाव स्वरूप नींद न आना, बेचैनी, उल्टी, कब्ज और रक्तचाप का धीमा हो जाना आदि स्वास्थ्यगत समस्याएँ आती हैं। अत: डॉक्टर के पर्चे के बगैर इसके प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

शोध उद्देश्य-

1. नशे के प्रति युवाओं का दृष्टिकोण जानना।
2. कौरेक्स सेवन तथा पश्चात् की प्रक्रिया के बारे में जानना।
3. युवाओं द्वारा कोरेक्स सेवन की ओर आकृष्ट होने के कारणों
4. कोरेक्स सेवन का युवाओं पर पड़ने वाले प्रभावों को जानना।
5. नशाखोरी के खिलाफ जन जागृति पैदा करना।

पूर्व साहित्य की समीक्षा-

(1) **सिंह शम्भूनाथ** ने (2017) में **कोरेक्स बना नशेड़ियों की पसंद** में झारखण्ड में किये अपने अध्ययन की रिपोर्ट में बताया कि झारखण्ड के हर जिले में कोरेक्स सिरप ब्लैक में मिल रहा है। युवाओं द्वारा इसे नशापन के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है।[8]

(2) **नागेन्द्र** ने (2013) में **कोरेक्स का शिकार हो रही युवा पीढ़ी** में बिहार के जमुई क्षेत्र में किये अपने अध्ययन के निष्कर्ष में कहा कि युवा वर्ग तेजी से कोरेक्स के नशे की गिरफ्त में आ रहे हैं। सस्ता होने के कारण गरीब युवा भी २ या उससे अधिक लोग पैसे मिलाकर इसे खरीद कर पीते है और नशे का आनंद लेते हैं।[9]

(3) **चौबे, राजेन्द्र कुमार ने** (2015) में **छात्रों में नशे की प्रवृत्ति के कारण एवं निदान** में अपने अध्ययन में पाया कि छात्रों और युवाओं में नशे के रूप में विभिन्न दवाईयों का भी उपयोग किया जा रहा है।[10]

अध्ययन क्षेत्र-

युवाओं में कोरेक्स के बढ़ते नशे की समस्या को ज्ञात करने के लिये मध्यप्रदेश राज्य के उत्तर पूर्व में स्थित रीवा नगर को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चुना गया है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार रीवा नगर की जनसंख्या 2,35,422 है। कोरेक्स का नशा करने वालों का प्रमुख अड्डा रीवा नगर का अस्पताल चौराहा, हॉकर्स कार्नर, कला मंदिर के सामने, हॉकर्स कार्नर, स्वागत भवन के पीछे, स्वागत भवन के सामने स्थित अपेक्स बैंक के समीप, शिल्पी प्लाजा, वाहन पार्किंग, बैजू धर्मशाला और न्यू बस स्टैण्ड[11] आदि अध्ययन के क्षेत्र है।

उपकल्पना-

1. कोरेक्स सेवन के प्रति आकर्षण उसकी सुलभता व कम दुर्गंध का होना है।
2. संगी-साथी और मौज मस्ती युवाओं में कोरेक्स सेवन का प्रमुख कारण है।

न्यादर्शो का चयन -

उद्देश्यपूर्ण (विचारपूर्वक) विधि का प्रयोग शोध अध्ययन हेतु किया गया हे। रीवा नगर के विविध अड्डों पर कोरेक्स का नशा करने वाले 100 नशेड़ियों को विचारपूर्वक निदर्शन द्वारा न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।

शोध प्रविधि एवं उपकरण-

प्रस्तुत शोध पत्र की अध्ययन विधि विश्लेषणात्मक हैं। तथ्यों को एकत्रित करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों का सहारा लिया गया है, जिससे वस्तुनिष्ठ जानकारी प्राप्त हो सकें। प्राथमिक तथ्यों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है, साथ ही अवलोकन विधि का भी प्रयोग करते हुये सूचनादाताओं के विचारों, अनुभवों व समस्याओं के बारे में जानकारी विधि का भी प्रयोग करते हुए सूचनादाताओं के विचारों, अनुभवों व समस्याओं के बारे में जानकारी एकत्र/प्राप्त की गई है। अध्ययन क्षेत्र में जाकर विषय से संबंधित परिस्थितियों, कारणों को निष्पक्ष रूप से देखा गया तथा वस्तुनिष्ठता के साथ उनका अवलोकन किया गया है।

द्वितीय स्त्रोतों के रूप में विभिन्न ग्रंथालयों, सरकारी एवं गैर सरकारी स्त्रोतों से प्राप्त आंकड़ों, लेखों एवं अभिलेखों, समाचार पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित व अप्रकाशित प्रतिवेदनों जनसम्पर्क कार्यालयों आदि से प्राप्त सूचनाओं का अध्ययन कर आवश्यक सामग्रियों का संकलन किया गया है।

इंटरनेट का उपयोग भी सूचना के स्त्रोत के रूप में प्रमुख रूप से किया गया है।

तथ्यों का एकत्रण एवं विश्लेषण-

सबसे पहले अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं की आयु जानने का प्रयास किया गया। चयनित उत्तरदाताओं का आयु वर्ग तालिका क्रमांक 01 में दर्शाया गया है:-

तालिका क्रमांक 01

सूचनादाताओं की आयु संबंधी जानकारी

क्रमांक	आयु वर्ग	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	18 से 24 वर्ष	64	62
2.	25 से 30 वर्ष	38	38
योग-		100	100

प्राप्त आँकड़े बताते हैं कि 18 से 24 वर्ष के उत्तरदाताओं में कोरेक्स सेवन की प्रवृत्ति 62 प्रतिशत पाई गई। 38 प्रतिशत उत्तरदाता 25 से 30 वर्ष की आयु के पाये गये।

युवावस्था जोश में होश खो देने वाली अवस्था होती हैं। अत: वे आसानी से कोरेक्स जैसे नशीले पदार्थ का सेवन कर स्वयं को पतन के गर्त में धकेल रहे हैं।

अध्ययन क्षेत्र के युवाओं में कोरेक्स इतना प्रिय नशा क्यों हैं, यह जानने पर प्राप्त आंकड़े तालिका क्रमांक 02 में प्रदर्शित हैं।

तालिका क्रमांक 02

कोरेक्स सेवन के प्रति आकर्षित होने संबंधी अभिमत

क्रमांक	अभिमत	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	सस्ता व सुलभ	55	55
2.	कर्म दुर्गंध	25	25
3.	अलग तरह का नशा	20	20
योग-		100	100

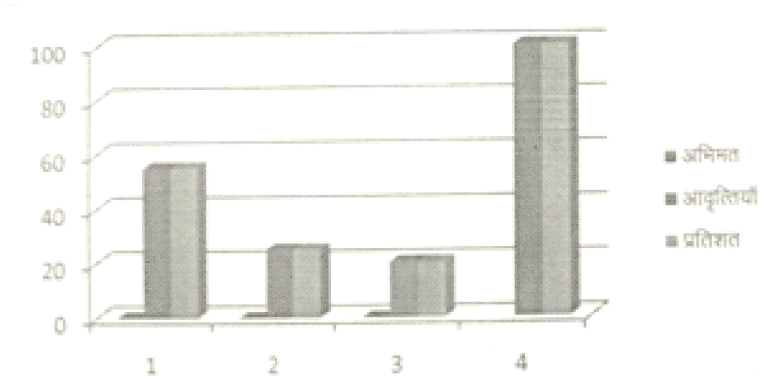

एकत्रित तथ्यों के विश्लेषण से पता चलता कि 55 प्रतिशत न्यादर्श कोरेक्स सिरप के सस्ता व सुलभ होने के कारण इसके सेवन के प्रति आकृष्ट हुये। 25 प्रतिशत न्यादर्शों ने इसके सेवन के बाद मुँह से कम दुर्गंध आने को इसको नशे के रूप में अपनाने की प्रेरणा मिली। 20 प्रतिशत न्यादर्शों ने इसके आकर्षण का कारण इसके सेवन के बाद अलग तरह के नशे को माना जाता है।

यानि सरलता से सस्ते में प्राप्त होने के कारण तथा परिजन व साथियों को उनके नशे सेवन का पता न चलने के साथ-साथ अलग तरह की नशे की अनुभूति उत्तरदाताओं को कोरेक्स सेवन के प्रति आकर्षित करती है। 66 रुपये का प्रिंट का कोरेक्स 90 से 100 रूपये में मिलता है।

वास्तव में भारत जैसे देश में नवयुवकों में नशा एक बड़ी चुनौती बनती जा रही है। पहले यह पान, तम्बाकू, गाँजा तक सीमित थी, परन्तु धीरे-धीरे यह आधुनिक तथा विनाशकारी दवाओं की ओर बढ़ने लगी है। युवा वर्ग क्यों नशा करने लगा है, इस संबंध में प्राप्त तथ्य सारणी क्रमांक 03 में प्रदर्शित है।

तालिका क्रमांक 03

कोरेक्स सेवन के कारण संबंधी जानकारी

क्रमांक	अभिमत	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	शौक/मौज'मस्ती/आनंद प्राप्ति	35	35
2.	संगी-साथी	38	38
3.	तनाव से मुक्ति	27	27
योग-		100	100

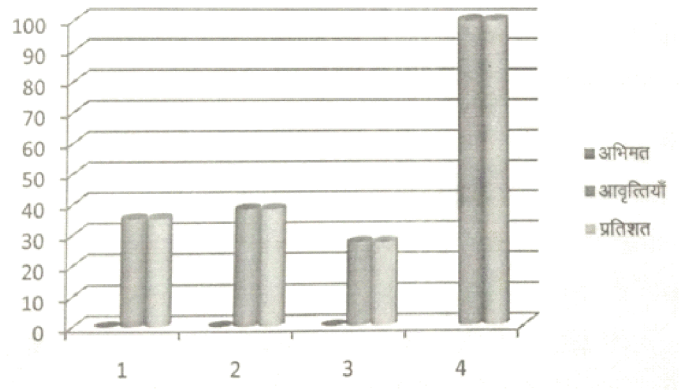

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 55 प्रतिशत उत्तरदाता शौक, मौज मस्ती और आनंद प्राप्ति के लक्ष्य से कोरेक्स का सेवन करते हैं। 38 प्रतिशत उत्तरदात कोरेक्स सेवन दोस्तों के साथ महफिल जानो और उनका साथ देने के लिये करते हैं। 27 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि वर्तमान जीवन में पढ़ाई, बेरोजगारी, कार्य की कमी या अधिकता, प्रेम संबंध, निराशा असफलता के कारण उत्पन्न तनाव से मुक्ति के लिये वे इसका सेवन करते हैं।

तालिका क्रमांक 04

कोरेक्स सेवन की विधि संबंधी जानकारी

क्रमांक	कोरेक्स सेवन की विधि	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	पानी के साथ मिलाकर	71	71
2.	गन्ने के रस में मिलाकर	29	29
	योग-	100	100

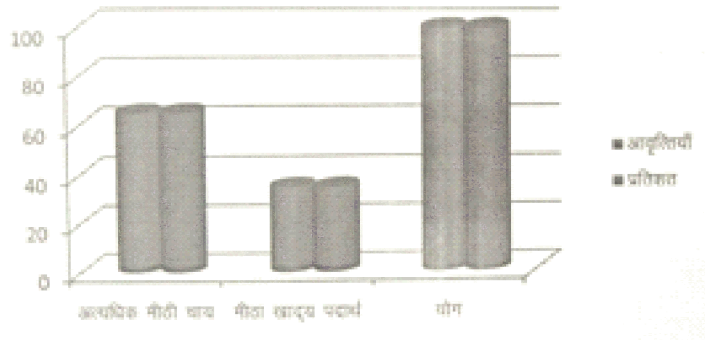

तालिका से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 71 प्रतिशत न्यादर्श कोरेक्स का सेवन पानी के साथ मिलाकर करते हैं तथा 29 प्रतिशत न्यादर्श इसे गन्ने के रस में मिलाकर पीते हैं।

अधिक जानकारी प्राप्त करने पर ज्ञात हुआ है कि कोरेक्स कम्पनी के सदस्यों की महफिल का आगाज चंदे से शुरु होता है, जिसके बाद अड्डे से कफ सिरप मंगाया जाता है। फिर इस सिरप को एक जग या मग्गे में डालकर व पानी में मिलाकर शर्बत की तरह फेटा जाता है और फिर इस मिश्रण का बराबर हिस्सा कर इसका सेवन किया जाता है। गन्ने के रस का प्रतिशत मात्र 29 इसलिये है क्योंकि गन्ने का रस सीजन में 2–3 माह ही मिल पाता है।

कोरेक्स सेवन के पश्चात् भी नशे में वृद्धि करने के लिए कोरेक्सियों द्वारा अलग प्रक्रिया को अपनाया जाता है। इससे संबंधित प्राप्त जानकारी तालिका क्रमांक 05 में रेखांकित है:-

तालिका क्रमांक 05

कोरेक्स सेवन के पश्चात् की प्रक्रिया संबंधी जानकारी

क्रमांक	कोरेक्स सेवन के पश्चात्	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	अत्यधिक मीठी चाय	65	65
2.	मीठा खाद्य पदार्थ	35	35
	योग-	100	100

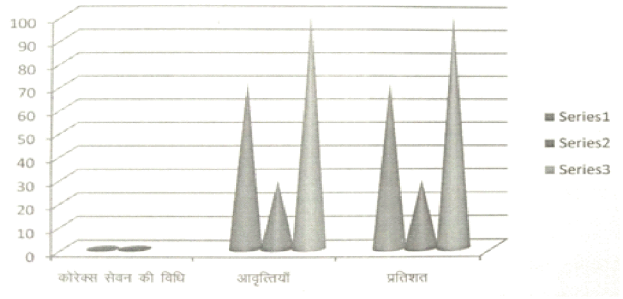

न्यादर्श कोरेक्स सेवन के बाद दिन भर मीठी चाय पीते रहते हैं। मीठी चाय उनके नशे को सिर्फ बढ़ाती हैं, बल्कि उसे ज्यादा समय तक कायम भी रखती है। उनके अनुसार यह चाय भी बिलकुल अलग होती हैं। इस चाय में शक्कर की मात्रा भी अत्यधिक होती है।

33 प्रतिशत न्यादर्शो के अनुसार वे कोरेक्स सेवन के पश्चात् मीठा पदार्थ खाते हैं, जिससे नशा बराबर बना रहता है। यही कारण है कि नशेड़ी कफ सिरप को पानी के बजाय गन्ने के रस में भी मिलाकर

पीते देखे जा सकते हैं।

स्वास्थ्य सबसे बड़ा धन है। किन्तु नशा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। हमारे उत्तरदाता इस बात को जानते हैं कि नहीं, यह ज्ञात करने पर तथ्य निम्न सारणीनुसार प्राप्त हुये :-

तालिका क्रमांक 06

नशे का स्वास्थ्य पर कुप्रभाव संबंधी जानकारी

क्रमांक	जानकारी है	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	हाँ	92	92
2.	नहीं	08	08
	योग-	100	100

92 प्रतिशत न्यादर्श नशे को स्वास्थ्य के लिए बुरा मानते हैं। अर्थात वे इसके दोष को जानने के पश्चात् भी नशे की गिरफ्त में स्वयं को पाते हैं। मात्र 08 प्रतिशत न्यादर्श इसके कुप्रभाव से अनभिज्ञ है।

नशे की भयानकता से परिचय के पश्चात् हमारे उत्तरदाता इससे मुक्त भी होना चाहते हैं क्या, यह जानने पर प्राप्त आंकड़े तालिका क्रमांक 07 में विश्लेषित है:-

तालिका क्रमांक 06

नशे का स्वास्थ्य पर कुप्रभाव संबंधी जानकारी

क्रमांक	जानकारी है	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	हाँ	92	92
2.	नहीं	08	08
	योग-	100	100

92 प्रतिशत न्यादर्श नशे को स्वास्थ्य के लिए बुरा मानते हैं। अर्थात वे इसके दोष को जानने के पश्चात् भी नशे की गिरफ्त में स्वयं को पाते हैं। मात्र 08 प्रतिशत न्यादर्श इसके कुप्रभाव से अनभिज्ञ है।

नशे की भयानकता से परिचय के पश्चात् हमारे उत्तरदाता इससे मुक्त भी होना चाहते हैं क्या। यह जानने पर प्राप्त आंकड़े तालिका क्रमांक 07 में विश्लेषित हैं:-

तालिका क्रमांक 07

नश छोड़ने संबंधी सहमति

क्रमांक	नशा छोड़ना चाहते हैं	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	हाँ	78	78
2.	नहीं	22	22
	योग-	100	100

68 प्रतिशत न्यादर्श नशा छोड़ने के पक्ष में सहमति देते हैं, यानि कि वे इसके शारीरिक, आर्थिक और सामाजिक प्रतिष्ठान पर लगने वाले धब्बे को जानते भी हैं और बचना भी चाहते हैं।

22 प्रतिशत न्यादर्श अभी मौज मस्ती को ही जीवन मानते हैं, अत: नशा छोड़ने का विचार नहीं रखते हैं।

न्यादर्श कोरेक्स सेवन के बाद दिन भर मीठी चाय उनके नशे को न सिर्फ बढ़ाती हैं, बल्कि उसे ज्यादा समय तक कायम भी रखती है। उनके अनुसार यह चाय भी बिलकुल अलग होती हैं। इस चाय में शक्कर की मात्रा भी अत्यधिक होती है।

उपकल्पना का परीक्षण-

80 प्रतिशत उत्तरदाता कोरेक्स सेवन के प्रति आकर्षित होने के लिए उसका सस्ता व सुलभ होना और मुँह से कम दुर्गंध आने का मानते हैं। (देखें तालिका क्रमांक 01) अत: तथ्यों के परीक्षण के पश्चात् हमारी पहली उपकल्पना सत्य साबितत होती है कि कोरेक्स सेवन के प्रति आकर्षण उसकी सुलभता व कम दुर्गंध का होना है।

35 प्रतिशत न्यादर्श शौक, मौज मस्ती तथा आनंद प्राप्ति के लिये कोरेक्स का सेवन करते हैं तथा 38 प्रतिशत न्यादर्श संगी-साथी के कहने पर इसे लेते हैं (देखे तालिका क्रमांक 03) अर्थात् 78 प्रतिशत न्यादर्शो द्वारा उपरोक्त कारणों से कोरेक्स सेवन किया जाता है। अत: हमारी दूसरी उपकल्पना भी प्राप्त आंकड़ों के आधार पर परीक्षण के पश्चात् सत्य साबित होती है कि संगी-साथी औरा मौज मस्ती युवाओं में कोरेक्स सेवन का प्रमुख कारण है।

निष्कर्ष-

वर्तमान में युवा आज किस परिवेश से घिरा है वहाँ अधीरता, असहनशीलता और आक्रोश युवा

वर्ग के पर्याय बन चुके हैं।

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि :-

1. कोरेक्स सेवियों का आयु वर्ग 18 से 24 वर्ष तक 62 प्रतिशत है और 38 प्रतिशत न्यादर्शों का आयु वर्ग 25 से 30 वर्ष तक है।

2. 55 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा कोरेक्स सेवन के प्रति आकर्षित होने की प्रमुख वजह इसका सस्ता व सुलभ होना है। 25 प्रतिशत उत्तरदाता इसमें दुर्गंध कम होने और 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा अलग प्रकार का नशा होने को लोकप्रियता का आधार बताते हैं।

3. कोरेक्स सेवन के कारणों में 73 प्रतिशत न्यादर्श शौक, मौज मस्ती फैशन और महफिल व दोस्ती को प्रमुख मानते हैं, वहीं 27 प्रतिशत न्यादर्श इसे तनावमुक्ति का पेय समझकर पीते हैं।

4. कोरेक्स असल में दवा है लेकिन इसके सेवन की विधि के संबंध में 71 प्रतिशत न्यादर्शों द्वारा पानी के साथ मिलाकर पीने की विधि का चयन किया जाता है, वहीं 29 प्रतिशत न्यादर्श इसे गन्ने के रस में मिलाकर पीते हैं।

5. कोरेक्स के नशे को लम्बे समय तक कायम रखने के लिए 65 प्रतिशत सूचनादाता कोरेक्स सेवन के पश्चात् अत्यधिक मीठी चाय को बार-बार पीते रहते हैं, वहीं 35 प्रतिशत न्यादर्श इसके नशे को बनाये रखने के लिये मीठे पदार्थों का सेवन करते हैं।

6. 92 प्रतिशत न्यादर्श मानते हैं कि नशे का स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, किन्तु वे नशे के आगे विवश है। 08 प्रतिशत न्यादर्श नशे आनंददायक मानते हैं।

7. नशा छोड़ने के संबंध में 78 प्रतिशत न्यादर्श अपनी सहमति देते हैं, 22 प्रतिशत न्यादर्श अभी इसके पक्ष में नहीं हैं, यानि कि वे इसकी गंभीरता से अनभिज्ञ है।

सुझाव-

1. नशे के खिलाफ समुचित स्वस्थ्य वातावरण तैयार किया जाए।

2. नशे के विरुद्ध कठोर नियम बनाये जाएं।

3. नशा निवारण हेतु किये जा रहे प्रयासों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।

4. नशे से संबंधित लुभावने नारों और विज्ञापनों पर पूर्णतया प्रतिबंध लगाया जाए।

5. ऐसे मेडिकल स्टोर्स जो कोरेक्स को सुगमतता से नशेड़ियों को देते हैं, उनके विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाए।

6. कोरेक्स सेवन करने वाले अड्डों पर पुलिस का पहरा लगाया जाए।

संदर्भग्रंथ सूची-

1. खान, एम.जेड. (1986) *ड्रग्स यूज अमंग द कॉलेज यूथ,*सौमेय्या पब्लिकेशन, बाम्बे, पृ.26

2. शुक्ल, महेश (2003) *समाज वैज्ञानिकी व्यसन विशेषांक,* राष्ट्रीय शोध पत्रिका में प्रकाशित संपादक की अपनी बात, गौरव प्रकाशन,रीवा

3. श्रीवास्तव, ए.एल. एवं गुप्ता, अंजुल (1990) *मादक द्रव्य व्यसन एवं युवा वर्ग,* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

4. निशीथ, राकेश शर्मा (2016) नशीले पदार्थों का कसता शिकंजा, *प्रतियोगिता दर्पण,* आगरा अगस्त 2016, पृ. 102

5. संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट, (2015).

6. चौबे, राजेन्द्र कुमार (2005) *छात्रों में नशे की प्रवृत्ति-कारण एवं निदान,* अर्जुन पाब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृ. 85.

7. *दैनिक भास्कर* (2015) कोरेक्स के नशे से बिगड़ता युवा, सतना, पृ. 06.

8. *https://www.bhaskar.com>news.*

9. *https://www.jagran.com>bihar.*

10. चौबे, राजेन्द्र कुमार (2005) *छात्रों में नशे की प्रवृत्ति-कारण एवं निदान,* अर्जुन पाब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृ. 102.

11. *दैनिक भास्कर* (2015) कोरेक्स के नशे से बिगड़ता युवा, सतना, पृ. 06.

****